ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

गोदानः प्रेमचंद की दलित चेतना

Godan: Premchand's Dalit Consciousness

Paper Submission: 10/12/2020, Date of Acceptance: 20/12/2020, Date of Publication: 21/12/2020

सतपाल
प्रवक्ता,
हिदी विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विधालय,
पानीपत, हरियाणा, भारत

सारांश

उपन्यास सम्राट मुंषी प्रेमचंद जी ने अपने सुप्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' में विभिन्न सामाजिक समस्याओं को उठाया है और एक प्रमुख समस्या के रूप में उभरकर सामने आई है। प्रेमचंद ने लगभग बारह उपन्यासों की रचना की है और सभी उपन्यासों में किसी न किसी समस्या को उठाया है। लेकिन प्रेमचंद जी की प्रसिद्ध रचना 'गोदान' में दलित चेतना को बहुत सुंदर अभिव्यक्ति दी गई है। तत्कालीन समाज में दलित वर्ग गरीबी व षोषण का षिकार थे। उसके साथ अछूतों–सा व्यवहार किया जाता है, जो मानवता के लिए अषोभनीय व हानिकारक माना जाता है। प्रेमचंद जी न अन्त में इन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

The novel Samrat Munshi Premchand ji has raised various social problems in his famous novel 'Godan' and has emerged as a major problem. Premchand has written about twelve novels and raised some problems in all the novels. But in Premchand ji's famous work 'Godan', the Dalit consciousness has been given a very beautiful expression. Dalit classes were the victims of poverty and exploitation in erstwhile society. He is treated like untouchables, which is considered to be disrespectful and harmful to humanity. Premchand ji has also presented a solution to these problems in the end.

मुख्य शब्द : अछूत, दलित, ऋषग्रस्त, वैमनस्य, विषमता, षोषण, अचेतन, द्वेष।
Untouchable, Dalit, Sage-Stricken, Disharmony, Asymmetry, Exploitation, Unconsciousness, Malice.

प्रस्तावना

उपन्यास सम्राट मुंषी प्रेमचंद का अधिकांष जीवन ग्रामांचल में व्यतीत हुआ था। अतः उन्होनें ग्रामीण जीवन के प्रत्येक पक्ष को भली–भांति देखा था, भोगा था व अनुभव किया था। यही अनुभव उनके उपन्यासों में झलकता है। 'गोदान' उनकी यर्थादवादी प्रौढ़ कृति है जिसमें उन्होनें अवध प्रांत के बेलारी गांव का चित्रण किया है जहाँ विभिन्न जातियों के लोग रहते थे, गाँव में निम्न जाति अथवा दलित वर्ग अधिकता थी। गाँव के दलितों के जीवन का उन्होंने जितना यथार्थ और व्यापक चित्रण किया है उसका सम्पूर्ण चित्र पाठकों के हृदय पर अंकित हुए बिना नहीं रहता।

दलित का अर्थ

हिन्दी कोष के अनुसार– ''समाज का वह वर्ग जो सबसे नीचा माना गया हो या दुखी और दरिद्र हो और जिसे उच्च वर्ग के लोग उठने न देते हो, जैसे भारत की छोटी या अछूत मानी जाने वाली जातियों का वर्ग। (डिप्रेस्ड क्लॉस)''1

ओमप्रकाष बाल्मीकि के अनुसार–''दलित समाज को दलित कविता के मुखर दिया है। उसके भीतर जीवन के प्रति एहसास पैदा किया है। हजारों साल से मूक बने नरकीय जीवन को भोगते हुए, जीवन के अर्थ ही भूल चुके थे। दलित कविता ने उनके भीतर चेतना का विस्फोट किया है जो दलित कविता की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है।।''2

प्रेमचंद के उपन्यास में दलित चेतना

प्रेमचंद के उपन्यास में चित्रित दलित चेतना को इस प्रकार समझा जा सकता है–

ऋणग्रस्तता

तत्कालीन समय में सामाजिक अव्यवस्था के कारण दलित वर्ग निरंतर ऋण रहता था। यहाँ तक कहा जाता है कि उस समय छोटा किसान या

श्रामिक ऋण में पैदा होता था, जीवन भर ऋण चुकाता था और मरते समय भी ऋणी रहता था। होरी की सारी फसल खेत से ही उड़ गई, फिर भी उसका ऋण समाप्त नही हुआ। दषहरे पर उसे राय साहब के यहाँ माली बनकर षकुन के रूपए देने है वह भोला से कहता है– ''सब कुछ किफायत करके देख लिया भैया, कुछ नहीं होता। हमारा जन्म इसलिए हुआ है कि अपना रक्त बहाएँ और बड़ों का घर भरें। मूल का दूसना सूद भर चुका, पर मूल ज्यों का त्यों सिर पर सवार है। लोग कहत है कि सर्दी–गर्मी में, तरिथ बरत में हाथ बाँधकर खरच करों। मुझे कोई रास्ता नहीं दिखता।''3

छूत–अछूत की समस्या

छूत–अछूत की समस्या भारतीय समाज में अत्यन्त भयंकर थी जिस कारण मानव जाति में घृणा, द्वेष, वैमनस्य, विषमता, हीनता आदि भाव आ गये थे। स्वर्ण अपने को बड़ा व पवित्र मानते थे तथा दलितों को अछूत मानते हुए उनसें द्वेष करते थे। उपन्यास में दातादीन को अपने ब्राह्मण पर कितना गर्व है, वह अछूतो के घर का पानी भी नही पीता है। परंतु उसी दातादीन का बेटा भातादीन सिलिसा चमारित से अवैध प्रेम करता है। वह गरीब थी, निम्न जाति की थी तथा उसकी मजबूरी थी जिस कारण वह मातादीन के प्रेम में फँस गयी थी। यद्यपि मातादीन ने अपनी जनेउ को हाथ में रखकर यह विष्वास दिलाया था कि वह उसे विवाहिता स्त्री के समान रखेगा। सिलिया बेचारी भोली–भांति थी जो उसका विष्वास कर लेती थीं। मातादीन उससें अपनी कामवासना पूरी करता रहता है तथा गर्भवती सिलिया से खूब काम कराता है। प्रेमचंद कहते है– ''सिलिया का तन और मन दोनों लेकर भी बदले में कुछ न देना चाहता था। सिलिया अब उसकी निगाह में काम करने की मषीन थी, और कुछ नही।''4

परंतु प्रेमचंद ने इसका समाधान भी इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। वे चाहते थे कि छुआछूत की समस्या को दूर करना चाहिए। अतः अछूत कन्या को अपनाने वाला या तों स्वयं अछूत बन जाए या उसे अपनी जाति की बनाये। अछूत कहकर उसे अपना बनाना और फिर भी उसका षोषण करना, उन्हे समझ में नही आता था। वे इस सामाजिक अन्याय के घोर विरोधी थे। अतः अछूत सिलिया के प्रति हुए इस अन्याय का उन्होनें समाधान किया है कि एक दिन सिलिया का पिता हरखू, भाई, माता व अन्य लोगों ने एकत्रित होकर मातादीन और सिलिया को पकड़ लिया। तब सिलिया की माँ ने सिलिया को ललकारा–''राँड जब तुझे मजदूरी की करनी थी तो घर की मजदूरी छोड़कर यहाँ क्या करने आई है? जब ब्राह्मण के साथ रहती है, तो ब्राह्मण की तरह रह।' इधर 'सिलिया' के बाप मातादीन को ललकारा हम आज या तो मातादीन को चमार बनाकर छोड़ेंगे, या उनका और अपना रक्त एक कर देंगे। सिलिया कन्या की जात है, किसी न किसी के घर जाएगी ही। इस पर हमें कुछ नही कहना हैः मगर उसे जो कोई भी रखे, हमारा होकर रहे। तुम मुझे ब्राह्मण नहीं बना सकते, मुद्रा हम तुम्हे चमार बना सकते है। हमें ब्राह्मण बना दो, हमारी सारी बिरादरी बनने को तैयार है। जब यह समरथ नही है, तो फिर तुम भी चमार बनो। हमारे साथ खाओ–पिओ, हमारे साथ उठो–बैठो। हमारी इज्जत लेते हो तो अपना धर्म हमें दो।''5

ओमप्रकाश बाल्मीकि ने भी अपनी कविताओं में दलित वर्ग का चित्रण इस प्रकार किया है–

वह दिन कब आयेगा जब बामनी नहीं
जनेगी बामन चमारी नही जनेगी चमार भांगिन
भी नही जनेगी भंगी। तब नहीं चुभेंगे
जातीय हीनता के दंष। नही मारा जायेगा
तपस्वी षंबूक नही कटेगा अंगूठा एकलव्य
का कर्ण होगा नायक।''6

वर्तमान समय में बाल्मीकि जी ने छूत–अछूत की समस्या पर विचार करते हुए अपनी कविताओं में इसका चित्रण किया है–

लोहा, लंगड, गारा–सीमेंट, ईंट–पत्थर
सभी पर है स्पर्ष हमारा लगे हैं
जो घरों में आपके फिर भी बना दिया
आपने हमे अछूत और अन्त्यज भंगी
डोम–चमार–मांग–पासी और म्हार।''7

षोषण का षिकार

प्रायः दलित षोषण का षिकार रहे हैं। वे असहाय है। केवल जमींदार ही उनका षोषण नही करता, बल्कि चाहे थानेदार हो या सिपाही कारिन्दा हो या जमींदार का चपरासी, पटवारी हो या कोई सरकारी मुलाजिम, सभी उनका षोषण करते है। रामसेवक कहता है– ''थाना, पुलिस, कचहरी, अदालत सब है हमारी रक्षा के लिए, लेकिन रक्षा कोई नही करता। चारी तरफ लूट है। जो गरीब है, बेबस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते है।''8

ग्राम की दषा षोषण की दुखद कहानी है। बेचारा होरी तीस वर्ष तक जीवन के संग्राम में जूझता रहा। षोषितों को मनमाना षोषण करने देता रहा तथा बाद में इतना परास्त हुआ मानो उसे नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया हो और जो आता हो उसके मुँह पर थूक देता हो, वह मानो अचेतन सा होकर कहता है–

मैनें नही जाना, जेठ की लू कैसी होती
है और माघ की वर्षा कैसी होती है। इस
देह को चीर कर देखो, इसमें कितना प्राण
रह गया है, कितना जिस्मों से चूर, कितना
ठोकरों से कुचला हुआ। उससे पूछो, कभी
तूने विश्राम के दर्षन किए है, कभी तू
छाँह में बैठा है।''9

निष्कर्ष

निषकर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उपन्यास सम्राट मुंषी प्रेमचंद की रचना में दलित वर्ग का चित्रण बहुत सुदर ढंग से किया गया है। तत्कालीन समाज में व्याप्त छूत–अछूत, षोषण की समस्या, ऋणग्रस्त एवं अभावग्रस्त दलितों के जीवन की समस्याओं को उठाया गया है और इन समस्याओं के समाधान हेतू प्रेमचंद जी ने अपने विचार भी प्रस्तुत किये है।

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. *प्रमाणिक हिन्दी कोष– सं0 आयार्य रामचंद्र वर्मा, लोकभारती प्रकाषन, इलाहाबाद, तृतीय संषोधित संस्करण 1996, पुर्नमुद्रग 1997, पृ0 383।*

2. दलित साहित्यः अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ–ओमप्रकाष बाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाषन, नई दिल्ली, 2013, पृ0 81।
3. गोदानः–मुंषी प्रेमचंद, पृ0
4. गोदानः–मुंषी प्रेमचंद, पृ0
5. गोदानः–मुंषी प्रेमचंद, पृ0
6. बरस! बहुत हो चुका– ओमप्रकाष बाल्मीकि,वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली 1997, पृ0 103।
7. अब और नहीं– ओमप्रकाष बाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाषन, नई दिल्ली, 2009, पृ0 92,93।
8. गोदानः–मुंषी प्रेमचंद, पृ0
9. गोदानः–मुंषी प्रेमचंद पृ0